

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७१

नित नवल : बेचन ठाकुर
छओ नाट्यग्रन्थक समालोचनात्मक पुनर्पाठ

LXXI

आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक
सम्पादकीय

खण्ड-७१

नित नवल : बेचन ठाकुर

छओ नाट्यग्रन्थक समालोचनात्मक पुनर्पाठ

शृङ्खला-सम्पादक
आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड-७१

समीक्ष्य सामग्री : नित नवल : बेचन ठाकुर — छओ नाट्यग्रन्थक आलोचनात्मक अध्ययन

मूल अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

शृङ्खला-सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

प्रस्तुत खण्ड : समीक्ष्य अध्ययनक आधारपर सम्पादकीय आलोचनात्मक पुनर्पाठ

प्रकाशन-संकेत : विदेह • २०२६

भाषा : मैथिली

मुद्रित आकार : ६ × ९ इञ्च

स्रोत-नीति : मूल नाट्यग्रन्थक स्वतन्त्र अध्ययन वा मंचनक प्रत्यक्ष अवलोकनक दावा नहि।

स्रोतक तथ्य आ व्याख्याक सीमा अन्तिम “स्रोत-सीमा आ सम्पादकीय टिप्पणी” खण्डमे निर्दिष्ट अछि।

अनुक्रम

सम्पादकीय भूमिका	4
१. 'नवघर'	6
२. 'बेटीक अपमान आ छीनरदेवी'	8
३. 'बाप भेल पिती आ अधिकार'	10
४. 'ऊँच-नीच'	13
५. 'बिसवासघात'	15
६. 'भअँट'	17
७. छओ अध्ययनक पारस्परिक संरचना	20
८. नाट्य-पद्धति आ समीक्षाशास्त्र	22
९. पाँच चयनित नाटक	24
१०. समग्र मूल्याङ्कन	26
स्रोत-सीमा आ सम्पादकीय टिप्पणी	27

सम्पादकीय भूमिका : सामाजिक रंगमंचक पाठ आ आलोचनाक उत्तरदायित्व

‘नित नवल : बेचन ठाकुर’ मैथिली नाट्य-साहित्यक छओ ग्रन्थपर केन्द्रित आलोचनात्मक अध्ययन अछि। एहि छओ ग्रन्थमे अनेक नाटक आ एकांकी समाहित अछि; तँ एकर आलोचनात्मक संसार एकल लेखकक प्रशस्ति मात्र नहि, ग्रामीण मंच, लोकबोली, सामाजिक सुधार, बाल-शिक्षा, स्त्रीक गरिमा, जातिगत श्रेणीक्रम, भूमि-अधिग्रहण आ चुनावी सत्ताक विस्तृत मानचित्र अछि। ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’क एहि खण्डमे एहि पुस्तककें एक स्वतन्त्र आलोचनात्मक पाठ मानि ओकर तर्क-शक्ति, पाठ-प्रमाण, शिल्पविवेक आ आन्तरिक अन्तर्विरोधक परीक्षण कएल जा रहल अछि।

एकटा आवश्यक भेद आरम्भे स्पष्ट करब उचित अछि। एहि खण्डक प्रत्यक्ष समीक्ष्य सामग्री गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल : बेचन ठाकुर’क उपलब्ध २०२६क DOCX पाठ अछि; बेचन ठाकुरक सभ मूल मुद्रित नाट्यग्रन्थ स्वतन्त्र रूपसँ एहि कार्यमे उपलब्ध नहि कराओल गेल अछि। तँ पात्र, दृश्य-संख्या, संवाद आ प्रकाशन-विवरणक जतेक तथ्य एतय उपयोग भेल अछि, से समीक्ष्य अध्ययनमे प्रस्तुत पाठ-साक्ष्यपर आधारित अछि। एहि आधारपर विश्लेषण कएल जा सकैत अछि, मुदा मूल प्रति अथवा वास्तविक मंचन देखबाक दावा नहि। ई सीमा स्वयं साहित्यिक आलोचनाक विश्वसनीयताक पहिल शर्त अछि।

समीक्ष्य पुस्तकक छओ विभाग—‘नवघर’, ‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’, ‘बाप भेल पित्ती आ अधिकार’, ‘ऊँच-नीच’, ‘बिसवासघात’ आ ‘भर्जेंट’—एकटा क्रमिक सामाजिक आयाम खोलैत अछि। पहिल संग्रहमे घरक भीतरक व्यवहार सार्वजनिक सभा धरि पहुँचैत अछि; दोसरमे कन्याक देह आ अन्धविश्वासक विरुद्ध प्रतिवाद अछि; तेसरमे बालक आ निर्धन नागरिकक अधिकार; चारिममे जाति आ वर्गक प्रश्न; पाँचममे कागज, मुआवजा आ न्याय; छठममे चुनावक संसाधन, हिंसा आ जनादेश। एहि आरोहकें नियत लेखक-योजना कहबाक प्रमाण नहि, मुदा अध्ययनक व्यवस्था एकटा अर्थपूर्ण पाठकीय क्रम अवश्य बनबैत अछि।

आलोचकक विशेषता ई अछि जे सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ स्वतः कलात्मक सफलता नहि मानैत छथि। कतहु दीर्घ भाषण दृश्यक गति रोकैत अछि, कतहु नायकक नैतिक विजय संस्थागत अन्यायकेँ बहुत जल्दी समाप्त देखबैत अछि, कतहु स्त्री अथवा बालकक स्वर सुधारवादी पुरुष-निर्णयक पाछाँ दबि जाइत अछि। एहि सीमासभकेँ नाम देनाइ साहित्यक अवमूल्यन नहि; बरु मैथिली रंगमंचकेँ समकालीन नाट्य-विवेकक संग पढ़बाक आवश्यकता अछि। मुदा आलोचनाक अपन जोखिमो अछि—बारम्बार एके कसौटी लगेलासँ भिन्न रचनाक अलग छन्द, अभिनय-ऊर्जा आ लोक-प्रदर्शनक परिप्रेक्ष्य कतहु एकरूप बुझाय लगैत अछि।

एहि समीक्षामे चारि सम्बन्धपर विशेष बल अछि: पाठ आ सम्भावित मंचनक दूरी; सुधारक नैतिक इच्छा आ पात्रक नाटकीय स्वायत्तता; प्रमाणक भाषा आ साधारण मनुष्यक अनुभव; तथा निजी वेदना आ सार्वजनिक संस्थाक बीचक आवाजाही। रस, संवाद, दृश्य-विन्यास, लोकभाषा आ दर्शक-सम्बोधनकेँ एहि सामाजिक प्रश्नसँ अलग नहि कएल जा सकैत। संगहि कोनो लेखकक ऐतिहासिक महत्व बतबैत समय प्रमाण-विहीन ‘पहिल’, ‘एकमात्र’ अथवा ‘सर्वश्रेष्ठ’क घोषणा सँ बचब जरूरी अछि।

पाठ-संग्रहक संरचना आ संस्करण-सावधानी

समीक्ष्य पुस्तक अपन अनुक्रमणिकामे छओ अध्याय आ अन्तमे सन्दर्भ-सूची राखैत अछि। ‘नवधर’क संस्करण-सूचनामे २०१७ आ २०१८क उल्लेखक अन्तर, ‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’क प्रकाशन-पृष्ठ आ आमुखक वर्ष-सूचनामे अन्तर, तथा ‘भअँट’क प्रकाशन-वर्षक अनिश्चितता आलोचनाक भीतर दर्ज अछि। ई छोट सम्पादकीय निरीक्षण नहि; साहित्येतिहासक तिथि काव्यात्मक अनुमानसँ नहि, प्रत्यक्ष प्रमाणसँ निर्धारित होइत अछि। पाठ-सम्पादनमे मूल ‘नीशा’, ‘बरहम’, ‘घोघवाली’, ‘रसुन पियोज’ आ ‘भअँट’ सन शीर्षक-रूप सुरक्षित रखबाक आग्रह सेहो एहि स्रोत-सम्मानक परिचायक अछि।

समीक्ष्य पुस्तक एक-एक ग्रन्थक भीतर दृश्यवार विवेचनक पद्धति अपनबैत अछि। एहि पद्धतिक लाभ अछि जे लम्बा सामाजिक नाटक सारांशक बोझमे हराइत नहि; ओकर पात्रक प्रवेश, कथाक मोड़, अभिनयक सम्भावना आ नैतिक अन्तर्विरोध अलग-अलग देखाइत अछि। सीमा ई अछि जे कतेको दृश्यपर विवेचन संक्षिप्त कथासार लगि सकैत अछि, जँ

बादमे ओकर शिल्पगत परिणति पर्याप्त स्पष्ट नहि कएल जाए। दृश्यगणना अपने आपमे विश्लेषण नहि; दृश्यक क्रम पाठक अनुभव कोना बदलैत अछि, से आलोचनाक केन्द्रीय प्रश्न रहबाक चाही।

१. ‘नवघर’ : लोकसुधार, संवाद आ सार्वजनिक सभाक मंच

चारि एकांकी, चारि रूपक

‘नवघर’क भीतर ‘नीशा मुक्ति’, ‘बरहम बाबा’, ‘घोघवाली कनियाँ’ आ ‘रसुन पियोज’क समावेश अछि। चारू रचनाक विषय अलग होइतहुँ ओकर साझा नाटकीय गति परिचित घर, गहबर अथवा संगी-दलसँ सार्वजनिक निर्णयक ठाम पहुँचबाक अछि। ‘नीशा मुक्ति’क व्यसन सामाजिक जागरण बनैत अछि; ‘बरहम बाबा’क श्रद्धा मानवीय गरिमासँ टकराइत अछि; ‘घोघवाली कनियाँ’क पारिवारिक विवाद पंचायतक सामूहिक प्रस्तावमे बदलैत अछि; आ ‘रसुन पियोज’क हँसी एक व्यक्तिक नाम आ सम्मानक विवाद बनि जाइत अछि। एहि तुलनासँ ‘नवघर’ शीर्षक घरक वास्तु नहि, नब व्यवहारक प्रयोगशाला बनैत अछि।

‘नीशा मुक्ति’क पाँच दृश्यमे शंकरक घर, यात्रा, पुलिसक बातचीत, बालकक आग्रह आ विद्यालयी जनजागरणक प्रसङ्ग अछि। आरम्भक घरेलू निकटता बादक जोखिमकें भावात्मक वजन दैत अछि। मुदा हादसाक सूचना जखन प्रत्यक्ष नाटकीय क्रियाक बदला संवादसँ भेटैत अछि, तखन भयक दृश्य-संरचना संकुचित होइत अछि। अन्तिम विद्यालयी गीत आ नारासभ दर्शक-सहभागिताक मूल्यवान साधन अछि; तथापि जन-अभियानक घोषित विजय व्यसनक आर्थिक, चिकित्सकीय आ पुनर्वास-सम्बन्धी जटिलता पूरा नहि समेटैत। बच्चाक सक्रियता एकर बल अछि; बच्चाकें मात्र शिक्षा देबाक साधन बना देब एकर सम्भावित सीमा।

‘बरहम बाबा’मे बौकु, बुधन आ फूलोक बीच श्रद्धा आ सामाजिक बहिष्कारक विवाद सीमित मंच-सामग्रीसँ बनैत अछि। फूलोक प्रश्न—के पूजा करय सकैत अछि, ककरा देवताक नाँवपर तिरस्कृत कएल जाए—ई धार्मिक विश्वासक सरल निषेध नहि, परम्पराक

नैतिक उत्तरदायित्वक माँग अछि। “हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी”क भावात्मक सघनता एहिमे विशेष ध्यानक योग्य अछि। ई वाक्य श्रद्धाकेँ नष्ट करबाक बदला ओकर विषय मनुष्यक गरिमा बनबैत अछि। मुदा सामाजिक बहिष्कारक संस्थागत संरचना जँ केवल बौकुक मन-परिवर्तनसँ हल भऽ जाय, तखन नाटक बदलावक कठिन प्रक्रिया संक्षेपित करैत अछि।

‘घोघवाली कनियाँ’ संग्रहक व्यापक पारिवारिक रंग-योजना अछि। सतन, ललिता, जीतन, परदेशी, रामदाइ आ रूपवतीक सम्बन्धमे वृद्धजनक देखभाल, सम्पत्तिक न्याय, स्त्रीक घर-भीतरक श्रम आ बालकक शिक्षा आपसदारीसँ जुड़ैत अछि। रूपवतीक प्रतिवाद घोघ-प्रतीकक विरोध भरि नहि; ओ प्रश्न करैत छथि जे घरक निर्णयमे सेवा करनिहार स्त्रीक ठाम की अछि। बाइस बिन्दुवला घरेलू समझौता अधिकारकेँ लिखित शर्त दैत अछि, मुदा रंगमंचपर निरन्तर बिन्दु-पाठ नाटकीय तनावकेँ सभाक कार्यवाहीमे बदलबाक खतरा राखैत अछि। एहिठाम साहित्य आ सामाजिक दस्तावेजक परस्पर सम्बन्ध विशिष्ट अछि।

रूपवतीक स्वर जतेक दृढ़, अंतिम पंचायत-स्वीकृति ओतेक द्विअर्थी। एक दिस सामाजिक परिवर्तनकेँ सार्वजनिक मान्यता भेटैत अछि; दोसर दिस प्रश्न उठैत अछि जे स्त्रीक निर्णयक वैधता केवल बाहरी सभा दैत अछि कि ओ अपनहि कर्तृत्वसँ वैध अछि। तेसर दृश्यक बालकक खेल आ शिक्षाक प्रसङ्ग एहि पैघ बहसकेँ पृथक रंग दैत अछि। बालमन अपन समय, उत्सुकता आ खेलक अधिकार रखैत अछि; एहने दृश्य कथाकेँ भाषणसँ बचबैत अछि। एहि कारण ‘घोघवाली कनियाँ’क सभसँ जरूरी उपलब्धि बाइस बिन्दुक प्रस्ताव नहि, ओकरा बनय सँ पहिले परिवारक भीतर उठैत असुविधाजनक प्रश्न अछि।

‘रसुन पियोज’क ताश, महँगाइक गप आ फेकूक उपनामपर सामूहिक हँसी रंगमंचीय दृष्टिसँ न्यून साधनमे चलबाक योग्य अछि। खाद्यवस्तुक दामसँ आरम्भ भेल शब्द एक व्यक्तिक अपमानजनक सामाजिक पहचान बनि जाइत अछि। हास्यक लय महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ई सहज मनोरञ्जनक सीधा उदाहरण नहि। समूह हँसैत अछि तँ शक्ति बाँटैत अछि—हँसनिहारक संख्या बढ़ला पर हँसीक लक्ष्यक आवाज घटि सकैत अछि। अन्तमे

उपनामक सामूहिक स्वीकृति मेल-मिलापक संकेत देत कि अपमानक सामान्यीकरण करैत अछि, ई प्रश्न खुले राखल जाए तँ रचनाक व्यंग्य आर तीक्ष्ण बनैत अछि।

आलोचनाक मुख्य निर्णय

‘नवघर’क अध्ययन पात्रक लोकबोली, गीत-नारा, सामूहिक प्रवेश, सार्वजनिक बहस आ विद्यालयी अभिनयक सम्भावना पर सम्यक् ध्यान दैत अछि। एकरा सम्पूर्ण बालनाटक कहबाक बदला बाल-किशोर रंगशिक्षाक उपयोगी दृश्यवला सामाजिक एकांकी-संग्रह कहल गेल अछि। ई विधागत संयम स्वागतयोग्य अछि। तथापि बाल-उपयुक्तताक विचार प्रत्येक अध्यायक निश्चित उपखण्ड बनि जेनासँ कखनो-कखनो नाटकक मूल प्रौढ़ दर्शक आ लोकनाट्यक स्वतन्त्र मनोरञ्जन-तत्त्व ओझराइत अछि। ‘नवघर’क मूल्याङ्कनक सार ई अछि जे सुधारवादी अभिप्राय नाट्यरूप तखन बनैत अछि जखन प्रश्न पूछनिहार फूलो, रूपवती आ फेकूकेँ अपन अनुभवक पूरा बल भेटैत अछि।

२. ‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’ : स्त्रीदेह, दहेज आ विवेकक

रंगभाषा

‘बेटीक अपमान’क त्रिअङ्की विस्तार

समीक्ष्य अध्ययन ‘बेटीक अपमान’क तीन अङ्क आ बाइस दृश्यक क्रम अलग-अलग देखैत अछि। दीपक, वीणा, हुनकर बेटासभ, बलवीर-सुनीताक परिवार आ हरिश्चन्द्र-राधाक बेटी शालिनीक माध्यमसँ कन्याक जन्मकेँ आर्थिक बोझ बुझबाक सामाजिक मानसिकता प्रस्तुत होइत अछि। आरम्भक दीपकक बेटीक चाह पूर्व गर्भ-समापनक प्रसङ्गसँ टकराइत अछि। नैतिक पछतावा आ वास्तविक व्यवहारक दूरी एहि नाटकक मूल व्यंग्य अछि: जे पुरुष बेटी नहि होयबाक पीड़ा बजैत अछि, सएह पुतोहू, दहेज आ रान्हनिहार स्त्रीक चाहकेँ पुरान आर्थिक हिसाबेँ देखैत रहैत अछि।

वीणाक लगातार गर्भ-सम्बन्धी कष्ट आ नाटकीय मृत्यु करुण प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। मुदा एहि मृत्युकेँ चिकित्सकीय कारणक अचूक व्याख्या मानब उचित नहि; ओ

सामाजिक हिंसाक प्रतीकात्मक परिणति अछि। नाट्यशिल्पक दृष्टिसँ एकटा कठिन प्रश्न सेहो अछि—स्त्रीक विरोधक आवाजकेँ आरम्भे समाप्त करि देलापर शेष नाटक पुरुषक पछतावा आ विवाह-बजारक जाल पर केन्द्रित भऽ जाइत अछि। कन्याविरोधक आलोचना करैत साहित्य स्वयं स्त्री-जीवनक स्वायत्त विस्तार कतेक सुरक्षित रखैत अछि, एहि कसौटीपर वीणाक मृत्यु आ मञ्जू-शालिनीक सीमित स्वरकेँ देखबाक चाही।

दहेजक उलटल अर्थशास्त्र नाटकक स्मरणीय प्रयोग अछि। कन्याक अभावक कारण जखन वर-पक्षक पक्षमे चालू रहल लेन-देनक व्यवस्था उलटय लगैत अछि, तखन पितृसत्तात्मक बाजार अपन विरोधाभासमे उजागर होइत अछि। शालिनीक सम्बन्धमे वर-पक्षसँ ५१ हजार टाकाक माँग नैतिक प्रतिशोधक एक दृश्य बनैत अछि। मुदा दहेज-प्रतिरोधक अन्तिम अर्थ स्त्रीकेँ दुर्लभ वस्तु बनाकऽ ओकर ‘मोल’ बढ़ाओब नहि। जँ आर्थिक उलटफेर मात्र समस्या हल करबाक साधन मानल जाए, तखन कन्याक स्वतन्त्र निर्णय, सम्मान आ उत्तराधिकारक प्रश्न फेर पाछाँ रहि जाइत अछि। एहि सीमाकेँ अध्ययन ठीक रूपेँ रेखांकित करैत अछि।

विवाहक छेका, चरण-पखारब, दक्षिणा, परिछन-गीत, बरियाती-सरियाती आ पुरुषसभाक मोल-भाव नाटकक लोक-सांस्कृतिक विस्तार बनबैत अछि। मंचपर ई सभ केवल रीति-सूची नहि, सत्ताक व्यवहार अछि। जे पाँयर धोअबैत अछि, जे शर्त रखैत अछि आ जे निर्णयक समय चुप रहैत अछि, तकर शक्ति-स्थितिक अन्तर नाटकीय दृश्य बनि सकैत अछि। आलोचनाक लाभ ई जे ओ लोकरीतिक विवरणकेँ मात्र रंगीनीक वस्तु नहि बुझैत; मुदा बारम्बार विवाह-विवरणक विस्तार सम्पूर्ण नाटकक समय-सन्तुलनकेँ कष्ट देत, तकर संकेत सेहो करैत अछि।

‘छीनरदेवी’ : अन्धविश्वासक भेषमे तर्क

पाँच दृश्यक ‘छीनरदेवी’ घरक भीतर रोग, भय, डाइन-आरोप आ कुटुम्बीय अविश्वासक नाटकीय रूप अछि। सुकनीपर आरोप आ ललनक असामान्य व्यवहार धार्मिक-भयकेँ घरेलू शत्रुतामे बदलैत अछि। भगतक प्रभुत्वक सोझाँ परबतियाक उपस्थिति विशेष प्रभावकारी अछि, कारण ओ तर्कक पक्षमे ठाढ़ होइतहुँ समाजक परिचित लोक-रूपक प्रयोग करैत

छथि। छद्म-दैवी मुद्रा आ विवेकक संगति रंगमंचमे दोहरा अर्थ रचैत अछि—दर्शक जे रूप देखैत अछि, ओकर भीतरक उद्देश्य क्रमशः बदलैत अछि।

अन्धविश्वास पर प्रहार करैत पाठककेँ ई प्रश्नो याद रहबाक चाही जे आरोपक लक्ष्य प्रायः असुरक्षित स्त्री किएक बनैत अछि। ओझा-भगतक नाटकीय खण्डन पर्याप्त नहि, जँ आरोप झेलिहार स्त्रीक सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ जीवनपर भेल क्षतिक प्रतिपूर्ति दृश्यसँ अनुपस्थित रहि जाए। परबतियाक तर्कक उपलब्धि एकटा साहसिक महिला-स्वर अछि; मुदा अन्य पीड़ित स्त्रीक अनुभव ओकर पाछाँ छोट भऽ सकैत अछि। ‘छीनरदेवी’क साहित्यिक विस्तार एहि अनुपस्थित आवाजकेँ पहचानलासँ बढ़ैत अछि।

युगग्रन्थक समग्र आलोचना

‘बेटीक अपमान’ त्रिअङ्की समय-विस्तार, दुःख, विवाह आ वृद्धावस्थाक त्रासदीसँ समाज-सुधारक कथा बनबैत अछि; ‘छीनरदेवी’ अपेक्षाकृत सघन पाँच दृश्य, छद्म आ प्रतिप्रश्नक सहारे विवाद खोलैत अछि। पहिल नाटक घटनाक संचयसँ पाठककेँ प्रभावित करैत अछि, दोसर अभिनयक युक्ति आ रहस्यक सीमित उपयोगसँ। दुनू रचनाकेँ एके पैमाना पर मापल जाए तँ विधागत भेद दबि जाएत। अध्ययन ई भेद सम्हारैत अछि, यद्यपि कतिपय निष्कर्षमे सामाजिक सन्देश दोहराएल अछि। सम्यक् आलोचनाक अन्तिम आग्रह स्पष्ट अछि: कन्याक जीवनक रक्षा प्रारम्भिक आवश्यकता अछि; स्त्रीक शिक्षा, श्रम, सहमति आ सामाजिक स्वायत्तता तकर आगेक आवश्यक चरण।

३. ‘बाप भेल पित्ती आ अधिकार’ : पारिवारिक हिंसा सँ नागरिक सम्मान धरि

दूनु नाटकक भीतर अधिकारहीन मनुष्य

युग-ग्रन्थक नामक पहिल अंश एक विफल पितृत्वक दास्तान अछि, दोसर ग्राम-प्रशासनसँ न्याय माँगनिहार नागरिकक। पिताक आँगन आ मुखियाक दुआर अलग संस्था लगैत अछि, मुदा दुनूमे अधिकार माँगनिहार मनुष्यकेँ पहिने अपन योग्यता सिद्ध करए पड़ैत

अछि। मनोज-संतोष शिक्षा आ भोजन लेल, तथा रिक्शाचालक मंजूर आवास-सहायताक हक लेल संघर्ष करैत छथि। ई समरूपता अध्ययनक प्रभावकारी तुलनात्मक खोज अछि। अधिकारकें दया, प्रशंसा अथवा अन्तिम पुरस्कारसँ पृथक करि पढ़लाक बाद युग्मक अर्थ आर स्पष्ट होइत अछि।

‘बाप भेल पिच्ची’मे लखनक दोसर बियाहक बाद मनोज आ संतोषपर भोजन, पढ़ाई आ आत्मीयताक विभेद बढ़ैत अछि। मीनाक एकरेखीय कठोरता सहज नाटकीय प्रतिनायकक रूप दैत अछि, मुदा शीर्षक स्वयं पिताक असफलता उजागर करैत अछि। लखन अपन पुत्रसभक हितक रक्षा नहि करैत छथि; तँ कथा मात्र सौतेली मायक विरुद्ध दयाभावक नाटक नहि, अभिभावकीय कर्तव्यसँ पलायनक आलोचना सेहो अछि। कृष्णाक प्रश्न आ बालकसभक विद्यालयमे नाम लिखेबाक आग्रह ई दिखबैत अछि जे बालक सामाजिक विवेकक स्वतन्त्र स्रोत भऽ सकैत अछि।

घर छोड़ल भायसभ लोकगीत आ थारी-लोटाक तालपर सहायता माँगैत छथि। एहि प्रसङ्गमे गीत कंगालीक अलंकरण नहि; अपमानकें सार्वजनिक सुनवाईक रूपमे बदलबाक माध्यम अछि। राधाक सहायता आ पढ़ाईकें धनसँ पहिने प्राथमिकता देबाक मनोजक निर्णय कथाक आशा अछि। मुदा बस-दुर्घटना, एक भायक हाथ कटब, दोसरक दृष्टि गुमाब आ अन्ततः प्रशासनिक सेवामे सफलता—एतेक बड़ संयोगक क्रम जीवित सामाजिक बाधाकें भावुक नैतिक विजयक चित्रमे सीमित करैत अछि। दृष्टिहीन संतोषक शिक्षाक सम्भावना जँ अचानक समाप्त मानल जाए, तखन कृति अपनहि शिक्षाधिकारक आग्रहकें संकुचित करैत अछि।

अन्तिम चरणमे मीनाक बीमारी आ मनोज-संतोषक चिकित्सा-सहायता क्षमाक भावुक रंग रचैत अछि। ई प्रतिशोधक अस्वीकारक सुन्दर सम्भावना अछि; मुदा बचपनक निष्कासन, मारि-पीट, अभाव आ दिव्याङ्ग जीवनक दीर्घकालिक परिणाम एक इलाजसँ मेटा नहि जाइत। मनोजक उच्च पदक प्राप्ति हुनकर अधिकारक प्रमाण नहि, ओकर व्यक्तिगत उपलब्धि अछि। अनगिनत साधारण बालक उच्च पद धरि नहि पहुँचि सकैत छथि; ताहूँ हुनकर गरिमा समान अछि। एहि भेदपर आलोचना ठोस नैतिक कसौटी विकसित करैत अछि।

‘अधिकार’ : दरखास आ दफ्तरक प्रत्यक्ष रंग

‘अधिकार’क पनरह दृश्यमे मंजूर बाढ़िसँ प्रभावित आश्रय आ अल्प आयक बीच आवास-सहायता लेल मुखिया चन्दन आ अमरनाथक भ्रष्ट माँगसँ जुड़ैत छथि। विनोदक सहयोगेँ आवेदन बनैत अछि; दरखास अधिकारी-दर-अधिकारी घूमैत अछि। कुर्सी पर बैसल प्रभुत्ववान आ जमीनपर बैसल आवेदकक दृश्य सामाजिक असमानताक सघन प्रतिमा अछि। कागज, फाइल, अधिकारीक दुआर, पहिचान आ सुरक्षा-कर्मी नाटकक वस्तु-व्याकरण बनैत अछि। पाठककेँ ई अनुभव होइत अछि जे अधिकार घोषित कानून मात्र नहि, ओकरा धरि पहुँचबाक श्रमसाध्य प्रक्रिया सेहो अछि।

मंजूरक घरमे पत्नी नजीमा आ बालकसभक अभाव प्रशासनिक कथाकेँ ठोस जीवनसँ जोड़ैत अछि। आवेदन दैबाक लेल रोजीक समय छोड़ब, शहरक यात्रा, बटखर्चाक कमी आ मुरहीक छोट भोजन—ई सभ अधिकार-संघर्षक आर्थिक मूल्य बुझबैत अछि। एहि दृश्यक तुलनामे दिल्लीक समारोह, मीडिया-प्रशंसा आ मुखियाक त्वरित क्षमा अधिक योजनाबद्ध नाटकीय अन्त बुझाईत अछि। मंजूरक प्रतिरोधसँ संस्थागत जाँचक वास्तविक प्रक्रिया कतेक बदलबैत अछि, से स्पष्ट नहि। नाटक व्यक्ति-प्रेरणा देइत अछि; आलोचना प्रशासनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न जोड़ैत अछि।

मंजूरक कथन “हमरा हरामक पाइ नै चाही” भ्रष्ट अनुग्रह आ वैध हकक बीच जरूरी भेद रचैत अछि। फेरो कृति जखन शिक्षा आ देशभक्तिक घोषवाक्यपर समाप्त होइत अछि, पात्रक आर्थिक अनुभवक जटिलता एक सार्वजनिक नैतिक नारेमे समा जाएत अछि। ई सुधारवादी नाटकक सामान्य तनाव अछि: जनसमुदायकेँ सन्देश देबाक चाह आ पात्रक अनुत्तरित अवस्थाक सत्य। अध्ययनक शक्ति एहि दुनूकेँ एकसंग देखबामे अछि, नहि जे नाटकक एक अर्थ घोषित करि दोसरकेँ निरस्त करि दैत अछि।

अधिकारक दू व्याकरण

पहिल नाटकमे अधिकार पारिवारिक सम्बन्धक भीतर अनसुनी आवाज अछि, दोसरमे कागजी आवेदनक माध्यमसँ सार्वजनिक मान्यता माँगैत आवाज। दुनूमे सहायता करनिहार मध्यस्थ आवश्यक छथि—राधा अथवा विनोद—मुदा मध्यस्थ नागरिकक स्थान नहि लऽ

सकैत। व्यक्ति स्वयं प्रश्न पुछैत अछि, तखने कथा नाट्यगति पबैत अछि। युग्मक आलोचना मंचीय आवश्यकता सेहो रेखांकित करैत अछि: बाल-अभिनयमे हिंसा आ दुर्घटनाक संवेदनशील प्रस्तुति, कार्यालयी दृश्यमे कागजक जड़ पाठसँ आगाँ क्रियात्मक विन्यास, तथा उच्च पद वा पुरस्कारकें न्यायक एकमात्र संकेत नहि मानब।

४. 'ऊँच-नीच' : शिक्षा, जमीन आ जातिक संयुक्त व्यवस्था

वस्तुसँ शुरू होइत सामाजिक भेद

'ऊँच-नीच'क तीन अङ्कमे छओ, नओ आ सात दृश्यक विस्तार अछि। मरनी-मङ्गलक श्रमजीवी परिवार आ चन्द्रेश झाक सम्पन्न संसार एक्कहि गाममे रहैत अछि, मुदा वस्तु, भाषा आ अवसरक पहुँच अलग अछि। पथिया-कोनीक मोल, विद्यालयक शुल्क, साहूकारक सूद, हँसली आ अन्ततः डीहक त्याग एक क्रमिक आर्थिक कथा बनबैत अछि। वस्तु-सूची एतय निरर्थक विवरण नहि; ई देखबैत अछि जे दरिद्र परिवार सन्तानक शिक्षाक मूल्य क्रमशः अपन दैनिक कमाइ, बचत, स्मृतिगहना आ निवाससँ चुकबैत अछि।

मरनीक भूमिका केवल त्यागमयी मायक पुरान प्रतिमा नहि। ओ पति मङ्गलक मद्यपानक विरुद्ध बोलैत छथि, मोल-भाव करैत छथि, बच्चाक पढ़ाई लेल योजना बनबैत छथि, तथा सामाजिक अपमानक सोझाँ अपन विचार राखैत छथि। ई श्रम आ अनौपचारिक ज्ञानक सक्रिय पात्र छथि। मुदा कथामे अपन जीवनक लगभग सभ साधन सन्तानक उन्नतिकेँ समर्पित करबाक अपेक्षा सेहो छन्हि। पाठककें पूछबाक चाही जे माएक स्वायत्त सुख, विश्राम आ आर्थिक सुरक्षा स्वयं कोन अधिकार थिक। स्त्रीक बलिदानक महिमा स्त्रीक अधिकारक पर्याय नहि बनबाक चाही।

दुखनक विद्यार्थी सँ अभियन्ता बनबाक यात्रा शिक्षा द्वारा सामाजिक गतिशीलताक आशा रचैत अछि। मुदा एतय योग्यता निजी परिश्रमसँ मात्र नहि बनल—माएक गहना आ घर-जमीनक बलिदान एकर अदृश्य मूल्य अछि। उच्च शिक्षा भेटलाक बादो नियुक्ति, सिफारिस आ सामाजिक प्रतिष्ठाक पुरान संरचना ओकर बाट रोकैत अछि। एहि कारण

नाटकक 'सफल विद्यार्थी' केवल प्रेरक नायक नहि; शिक्षा-संस्थाक भीतर टिकि रहल जाति-वर्ग भेदक साक्ष्य सेहो अछि।

सम्पन्न घरक आधुनिकता आ ओकर सीमा

चन्द्रेश झा अपन बेटीकेँ चिकित्सकीय शिक्षा देबाक सामर्थ्य राखैत छथि, मुदा विवाह-निर्णयमे जातिगत सीमा छोड़ेबाक लेल तैयार नहि। एहि विरोधाभासमे आधुनिकता आ परम्पराक आसान द्वन्द्वसँ बेसी जटिल शक्ति-व्यवस्था अछि। आर्थिक निवेश केनिहार पिता शिक्षित बेटीक स्वायत्तता पर स्वामित्वक दावा करैत छथि। दुखनक प्रतिभा सम्मानयोग्य बुझाईत अछि, मुदा जखन प्रश्न सामाजिक निकटता आ विवाहक अबैत अछि, तखन 'ऊँच-नीच' अपन असली अर्थ देखबैत अछि। आर्थिक सम्पन्नता शिक्षा देब स्वीकार करैत अछि; बराबरीक सम्बन्ध स्वीकार करब ओकरा अधिक कठिन बुझाईत अछि।

अन्तिम पंचायत आ विवाहक स्वीकार सामाजिक प्रतिरोधक जीत जकाँ प्रस्तुत होइत अछि। ई लोकमंचक भावनात्मक संतोष अछि, मुदा जातिगत श्रेणीक्रम केवल एक परिवारक मन-परिवर्तनसँ समाप्त नहि होइत। जमीनक स्वामित्व, रोजगारक पहुँच, सामूहिक संगठन, विद्यालयक शुल्क आ स्त्रीक दीर्घकालिक पेशागत स्वायत्तता बाँचल प्रश्न अछि। नाटकक अन्तिम सहमतिमे एहि सभक उत्तर पूरा नहि अछि। आलोचनाक उचित काज विजयक मूल्य स्वीकार करब आ ओकर सीमा सेहो देखब।

रंगशिल्पक सघनता आ फैलाव

श्रमजीवीक औजार, हँसली, सिरकी, कागज, हस्ताक्षर, विद्यालय आ पंचायतक आसन रंगमंचक अर्थपूर्ण सामग्री अछि। दर्शक वस्तुक हरि-जेनाइ अथवा हाथ-बदल देखैत अछि तँ सम्बन्धक आर्थिक बोझ समझैत अछि। एहिमे नाटकक दृश्यकला अछि। लोकबोली मरनीक तर्क, मङ्गलक द्विविधा, चन्द्रेशक आदेश आ सहायक पात्रक विनोदकेँ अलग ध्वनि दैत अछि। तेसर अङ्कक शिक्षित युवाक आगमन समय-छलाँगक अभिनय-समस्या उत्पन्न करैत अछि; एकरा दृश्य-सन्धि, प्रकाश आ ध्वनिसँ स्पष्ट करबाक आवश्यकता अछि।

बाल-साहित्यक तुलना एहि नाटक लेल उपयोगी तँ अछि, किन्तु एकरा बालनाटक बना देबाक कारण नहि। दुखनक बाल्यक शिक्षा-संकट किशोर पाठककेँ सामाजिक न्याय

सोचबाक अवसर दैत अछि; मुदा दीर्घ कालविस्तार, मद्यपान, आर्थिक हिंसा, भूमि-त्याग, प्रेम-विवाह आ पंचायतक जटिल वार्ता मूलतः प्रौढ़ सामाजिक रंगमंचक अवयव अछि। विधागत अन्तर सुरक्षित रखितहुँ शैक्षिक उपयोग सोचल जाए तँ कृतिक सामाजिक प्रभाव बढ़ैत अछि।

५. ‘बिसवासघात’ : विश्वासक कागज, मुआवजा आ न्यायक

अँधेर

भरोसा जखन दस्तावेज बनि जाइत अछि

‘बिसवासघात’ तीन अङ्क आ चालीस दृश्यक विस्तारमे पारिवारिक विश्वासक धीरे-धीरे विघटनक कथा रचैत अछि। राम किशुन, लखन आ सियाराम जमीन-अधिग्रहणक प्रसङ्गमे एक-दोसरापर भरोसा करैत छथि। मुदा मूल भूमि-कागज हाथमे लेब अधिकारक असल साधन बनैत अछि। भाईचाराक भाषा आर्थिक गणितसँ टकराइत अछि। लक्ष्मीक आरम्भिक सावधानीक अनसुनी ओहि धोखाक प्रथम क्षण अछि—ओ लिखित कागज बुझबाक आग्रह करैत छथि, मुदा पितृसत्ता हुनकर तर्क अस्वीकार करैत अछि। नाटक एतय जानकारी आ अधिकारक सम्बन्ध दृश्य बनबैत अछि।

मुआवजाक राशि तीन लाख बीस हजार सँ हेराफेरीक बाद बत्तीस लाख धरि बढ़बाक वृत्तान्त स्रोत-अध्ययनमे दर्ज अछि। एहि गणितक सटीकता नाटककें रहस्य-प्रधान कथा मात्र नहि रखैत; भ्रष्टाचारक अर्थव्यवस्थाक मूर्त रूप बनबैत अछि। अभियन्ता, भूमिअर्जन कर्मचारी, चपरासी, पुलिस आ परिचित मध्यस्थ अलग-अलग स्तरपर रकमक दिशाकें बदलैत छथि। जे कागज पढ़ि सकैत अछि आ दफ्तरक भीतर पहुँच राखैत अछि, सएह सत्यक व्याख्यापर प्रभुत्व पबैत अछि। एहि अर्थमे ‘बिसवासघात’ सामाजिक दस्तावेजक एक गंभीर नाटक अछि।

चाहक पुनरावृत्ति एक विशेष सूक्ष्म रंग-युक्ति अछि। भाइक आत्मीय चाह, अफसरक सत्कार, पुलिस-संग लेन-देन आ रामलालकें मित्रवत् छलसँ लऽ जेनिहार चाह-दोकान—एके दैनन्दिन वस्तु अपन अर्थ बदलैत अछि। दर्शक पहिने अपनत्व बुझैत अछि, बादमे

अर्थसँ भरल छल। एहि प्रकारक वस्तु-ध्वनि दीर्घ भाषणसँ अधिक स्थायी प्रभाव छोड़ि सकैत अछि। समीक्ष्य अध्ययनक पठनमे ई बिन्दु विशेष सशक्त अछि।

रामलाल : तर्कशील नायक, मुदा अनिर्विवाद नहि

रामलाल समाचार-पत्रक रकम आ कार्यालयी हिसाब जोड़ि धोखा देखैत अछि। ओ पिताक आदेशकेँ प्रमाणक कसौटी परखैत अछि आ शिकायत लऽ प्रशासन धरि जाइत अछि। एहिठाम नव पीढ़ीक नागरिक विवेक नाटकीय कर्तृत्व पबैत अछि। तथापि पिताक संग मारि-पीट आ जबरदस्ती निशान लेबाक घटना ओकर प्रतिरोधकेँ नैतिक प्रश्नसँ परे नहि रखैत। जँ सत्यवादी नायक अपनहि साधनमे हिंसा अपनाबय तँ नाटकक न्याय-बोध दू भागमे बाँटि जाइत अछि। ई जटिलता आलोचनाक लेल मूल्यवान अछि; नायकक मृत्यु ओकर पहिले कएल गलत कार्य अपने आप निष्प्रश्न नहि करैत।

रामलालक हत्या निजी सम्पत्तिक विवादकेँ सामुदायिक शोक बनबैत अछि। लक्ष्मी, झामलाल आ लक्ष्मण जनबैसार, आवेदन आ धरनाक प्रक्रियामे आवाज उठबैत छथि। आरम्भमे घरक भीतर अनसुनी स्त्रीक चेतावनी अंतिम चरणमे सार्वजनिक विवेकक नैतिक स्रोत बनि जाइत अछि। मुदा निर्णायक न्याय फेर शक्तिशाली प्रशासकक हाथमे पहुँचब जन-संघर्षक क्षमता आ राज्य-प्राधिकारक विश्वास बीच तनाव राखैत अछि। नाटकक सच्ची राजनीतिक सम्भावना एहि अधूरा सम्बन्धमे छिपल अछि।

न्याय आ प्रतिशोधक खतरनाक समीकरण

दोषीसभक मारि-पीट द्वारा स्वीकारोक्ति, अपराधी दलक हिंसक समाप्ति आ जनता दरबारमे दस लाख टाकाक देनदारी तय करबाक दृश्य तात्कालिक न्याय-संतोष पैदा करैत अछि। मुदा अवैधानिक दण्ड, न्यायालयविहीन निर्णय आ आर्थिक समझौता हत्या तथा सरकारी धनक हेराफेरीक विधिसम्मत समाधान नहि। एहि बातक स्पष्ट आलोचना अति आवश्यक अछि। साहित्यकारक भ्रष्टाचार-विरोधी इच्छा मान्य होइतहुँ साधनक मर्यादा पर प्रश्न उठेबाक अधिकार आलोचनाक अछि। ‘न्याय’ शब्द मात्र सदिच्छाक आवरण बनि जाय तँ पीड़ितक संरक्षणो असुरक्षित होइत अछि।

लखनक अन्तिम प्रश्न—रुपैया भेटल, मुदा बेटा फेर घुरत की—कथाक घोषित समाधानकेँ स्वयं अस्थिर करैत अछि। सामाजिक रंगमंचक ई सर्वाधिक प्रभावशाली क्षणसभमे सँ एक अछि: रकमक अड्क, दोषीक माफी आ प्रशासनक प्रशंसा सभ मृत मनुष्यक अभावक सोझाँ छोट पड़ैत अछि। आलोचनाक दृष्टिसँ नाटकक सफल अन्त तखन पाठक पर प्रभाव छोड़ैत अछि जखन ओ सम्पूर्ण समाधान नहि, अपूरणीय क्षतिक स्मरण बनि रहैत अछि। चालीस दृश्यक विस्तारक भीतर एहि एक मानवीय असमाप्ति तक पहुँचब कृतिक सर्जनात्मक सार्थकता अछि।

अभिनय-व्यवस्था आ सम्पादनक प्रश्न

चालीस दृश्यक क्रम दलान, चाह-दोकान, भू-अर्जन कार्यालय, थाना, सरपंचक बैसार, अपराधीक अड्डा आ समाहरणालयकेँ जोड़ैत अछि। ई विस्तार ग्रामसमाजक परत खोलैत अछि, मुदा मंचनमे लगातार स्थान-परिवर्तनक भारी माँग राखैत अछि। संवादक सूचनात्मक हिस्साक संक्षेप, कागजक दृश्यात्मक उपयोग, चुनिन्दा स्थल-संकेत आ हिंसाक नेपथ्य-आधारित प्रस्तुति सम्भावित विकल्प अछि। मंचीय रूपान्तरण मूल अध्ययनक पाठ-प्रमाण बदलबाक स्वीकृति नहि; दुनू भिन्न सम्पादकीय स्तर अछि।

६. ‘भअँट’ : चुनाव, सामूहिकता आ जनादेशक कसौटी

पाँच प्रत्याशी, अनेक राजनीतिक भाषासभ

‘भअँट’क पात्र-परिचयमे एक सय एक क्रमाङ्कित भूमिका आ पाँच प्रमुख प्रत्याशी—गोबर्धनलाल, फीरन, ब्रजेश, सुभद्रा आ विवेक—उल्लिखित छथि। ई व्यापक सामाजिक संसार लोकतन्त्रकेँ केवल भाषणक नैतिक विषय नहि, चुनावी व्यवहारक सम्पूर्ण प्रक्रिया रूपमे राखैत अछि। दलानक सलाहकार, नामांकन-कर्मचारी, मतदाता, सरपंच, पुलिस, पुजारी, सुरक्षाकर्मी आ गणना-अधिकारी सभ मिलि राजनीति रचैत छथि। एतेक पात्रक अर्थ एकल चरित्रक मनोवैज्ञानिक गहराई नहि, संस्थाक अनेक स्वरोंक दृश्यांकन अछि।

गोबर्धनलालक इमानदार अपेक्षा आर्थिक संसाधनक अभावसँ लड़ैत अछि। फीरन पुरान हार आ आर्थिक निर्भरता कारण परोक्ष चुनावी सौदाक शिकार बनैत अछि। ब्रजेश सत्ताक अहंकार, उपहार-वितरण आ लाभक असम्भव आश्वासनपर भरोसा करैत अछि। विवेकक अड्डा बूथ-कब्जा आ हिंसाक लगभग सार्वजनिक उद्धोषणा बनि उठैत अछि। एहि चारि प्रवृत्तिक बीच सुभद्रा जनसम्पर्क, सीमित भाषण आ उत्तरदायित्वक दावा राखैत छथि। लेखक विचारधारात्मक विरोधक बजाय व्यवहारक विशिष्ट रूपसभ सँ राजनीतिक नैतिकता परीक्षण करैत छथि।

नामांकन कार्यालयक फॉर्म, पैसा, पहिचान आ छोट-छोट वसूली नाटकक राजनीतिक अर्थव्यवस्थाकें केन्द्रमे आनैत अछि। चुनावी प्रतियोगितामे औपचारिक बराबरी होइतहुँ वास्तविक संसाधन असमान अछि। सार्वजनिक सभा प्रचारक लयक संग भीड़कें भावात्मक बनबैत अछि; मुदा राकेशक गुप्त आर्थिक सौदा आ फीरनक लोकहितक घोषित वचन बीच विरोध नाटकीय विडम्बना उत्पन्न करैत अछि। ओतहि ब्रजेशक वस्तु-वितरणक दृश्य मतदाताकें ग्राहक बनाय देबाक प्रवृत्ति देखबैत अछि।

मतदाता : नीति आ प्रलोभनक बीच

बच्चा बाबूक पंचायत-बैसार एहि नाटकक एक केन्द्रीय दृश्य बनैत अछि। गामक सामूहिक विवेक प्रत्याशीसभकें प्रश्न पुछबाक प्रयास करैत अछि, मुदा धन-वितरणक प्रवेशेँ चर्चा मोल-भावमे फँसि जाइत अछि। ई क्षण नाटककें केवल भ्रष्ट नेता विरुद्ध सुजान जनता बला सुविधा सँ बचबैत अछि। मतदाता निष्क्रिय पीड़ित मात्र नहि; चुनावी नैतिकताक निर्माण आ विघटनमे ओकर व्यवहार सेहो महत्वपूर्ण अछि। राजनीतिक लोकतन्त्रक साहित्यिक आलोचना लेल ई द्विपक्षीय उत्तरदायित्व आवश्यक अछि।

चाह-दोकान राजनीतिक जनमतक अनौपचारिक स्थल अछि; भगवती-मन्दिर चुनावी मनौती आ चढ़ावाक भेटस्थल; थाना सुरक्षा आ भयक विरोधाभासी संस्था। एके कथामे एहि सार्वजनिक स्थलसभक प्रवेशेँ पाठक बुझैत अछि जे राजनीति मतगणना-दिनक घटना नहि, पूरा सामाजिक समयमे चलैत व्यवहार अछि। भाषा सेहो अलग सामाजिक स्तरक परिचय दैत अछि—स्थानीय मैथिली, प्रशासनिक हिन्दी, सुरक्षा-कर्मिक आदेश आ

प्रत्याशी-दलक फूहड़ मिश्रित वाक्य। भाषिक बहुलता समाजक ध्वन्यात्मक नक्शा रचैत अछि।

मतदान केन्द्रपर हिंसक बूथ-कब्जाक प्रयास आ मतयन्त्रक सुरक्षा करनिहार कर्मिक भ्रष्ट प्रस्ताव अस्वीकारब चुनावक व्यंग्यात्मक लय बदलि दैत अछि। हास्यसँ आरम्भ भेल अनेक दृश्य रौद्र आ भयक राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे पहुँचैत अछि। मुदा प्रत्यक्ष हिंसा जँ अत्यधिक तमाशा बनि जाए तँ नागरिक जोखिम नाटकीय सनसनीक अधीन पड़ि सकैत अछि। रंगमंचकेँ दर्शकक तर्कशील दूरी बचबैत गंभीरता कायम रखबाक आवश्यकता अछि।

सुभद्रा आ विजयानन्तर प्रश्न

सुभद्रा प्रमुख महिला प्रत्याशी होयबाक कारण बहुस्तरीय प्रतीक बनैत छथि। ओ अनुचित साधनसँ दूरी चाहैत छथि, पराजयक स्मृति राखैत छथि आ जीतक बाद जनसम्पर्क जारी राखबाक वचन दैत छथि। मुदा हुनका सदैव पूर्ण नैतिक आदर्श बना देलासँ स्त्रीक राजनीतिक अनुभवक संघर्ष, समझौता आ संगठनक काम सपाट भऽ सकैत अछि। महिला प्रतिनिधित्वक सार स्त्रीक ‘शुद्धता’ नहि; सार्वजनिक निर्णयमे बराबर अधिकार, संसाधन आ जवाबदेही अछि। मालाक सहभागिता एहि राजनीतिक सक्रियताक एक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि।

समीक्ष्य अध्ययनक अनुसार सुभद्राक १,२५,३६१ मत आ निकटतम प्रतिद्वन्द्वी गोबर्धनलालक ५०,००९ मतक बीच ७५,३५२ मतक अन्तर अछि। अङ्कगणित मिलैत अछि; मुदा एहि कल्पित निर्वाचनक परिणामकेँ वास्तविक ऐतिहासिक चुनावक तथ्य नहि मानबाक चाही। नाटकीय प्रश्न ई अछि जे गामक प्रलोभनग्रस्त मतदान-व्यवहारसँ एतेक प्रचण्ड नैतिक विजयक कारण-सम्बन्ध पर्याप्त रूपेँ विकसित भेल कि नहि। आलोचनाक सावधानी एहि अन्तरकेँ पहचानैत अछि।

अन्तिम दृश्य विजय-उत्सवसँ आगाँ निर्वाचित प्रतिनिधिक भविष्यक जनसेवापर बल दैत अछि। ई निर्णय नाटकक सबल पक्ष अछि, कारण लोकतन्त्रक कसौटी परिणामक घोषणा नहि, विजयानन्तर उत्तरदायित्व अछि। तथापि मंचपटक केवल प्रतिज्ञा देखबैत अछि; कार्यक वास्तविक अभिलेख नाटकक बाहर अछि। एहि खुला अन्तरमे ‘भअँट’क

राजनीतिक उपयोगिता अछि: दर्शककेँ एहन प्रश्न भेटैत अछि जकर उत्तर नाटक अपने न दैत—निर्वाचित प्रतिनिधि फेर कखन गाम आबि लोकक बात सुनत?

७. छओ अध्ययनक पारस्परिक संरचना : किछु साझा

आलोचनात्मक सूत्र

घरसँ संस्थाक दुआर धरि

समीक्ष्य नाट्य-संसारमे घर आ सार्वजनिक संस्थाक सम्बन्ध पुनः-पुनः बदलैत अछि। ‘घोघवाली कनियाँ’क निजी समझौता पंचायतमे पहुँचैत अछि, ‘बेटीक अपमान’क पारिवारिक चाह विवाह-बजारक गणित बनैत अछि, ‘बाप भेल पित्ती’क बालक सार्वजनिक गीतक सहारे शिक्षाक बाट खोजैत अछि, ‘अधिकार’क रिक्शाचालक दफ्तर पहुँचैत अछि, ‘ऊँच-नीच’क श्रमजीवी शिक्षा आ पंचायतक संस्था धरि पहुँचैत अछि, ‘बिसवासघात’क भाइक विवाद पुलिस-अधिकारीक प्रशासन धरि जाइत अछि, आ ‘भअँट’मे पूरा ग्रामसमाज निर्वाचनक प्रक्रियामे भाग लैत अछि। एहि आवागमनमे सामाजिक रंगमंचक एक पहिचान अछि: व्यक्तिगत घटना स्वयंमे अन्तिम सत्य नहि।

दस्तावेजक शक्ति आ ओकर दोहरा उपयोग

कागजक भूमिका एहि ग्रन्थसभमे विशेष ठोस रूपेँ लौटैत अछि। घरक बाइस बिन्दुवला समझौता दायित्वक भाषा दैत अछि; आवास-सहायताक आवेदन मंजूरकेँ अधिकारक दुआर पर लबैत अछि; ‘ऊँच-नीच’क हस्ताक्षर जमीनक स्वामित्व बदलैत अछि; ‘बिसवासघात’क दस्तावेज चोरी आ प्रतिरोध दुनू सम्भव करैत अछि; ‘भअँट’क नामांकन-पत्र आ गणना आँकड़ा जनादेशकेँ वैध रूप दैत अछि। लिखित प्रमाण तटस्थ वस्तु नहि—ओकर पहुँच, पाठक आ संरक्षणक सामाजिक वितरण भिन्न अछि। दस्तावेजी न्याय तखनहि सार्थक होयत जखन निर्बल मनुष्य ओकर अर्थ पढ़ि सकत।

स्त्रीक प्रतिवाद : उपस्थित, पर अधूर

फूलो, रूपवती, वीणा, परबतिया, मरनी, लक्ष्मी आ सुभद्रा अलग सामाजिक धरातल पर ठाढ़ छथि। कियो श्रद्धाक भीतर गरिमा पुछैत अछि, कियो घरक बराबर अधिकार, कियो प्रजननक पीड़ा, कियो डाइन-आरोपक प्रतिरोध, कियो बालकक शिक्षा, कियो कागजक सावधानी, आ कियो जनसेवाक राजनीति। एहि पात्रसभकेँ एकटा ‘आदर्श नारी’ श्रेणीमे राखब कठिन अछि। मुदा अधिकांश कथानक अंतिम निर्णयमे पिता, मुखिया, पंचायत वा अधिकारीक स्वीकृतिपर लौटैत अछि। ताहि लेल स्त्री-स्वरक उपस्थिति आ स्त्रीक निर्णयक संस्थागत प्रभावकेँ अलग-अलग देखबाक चाही।

बालकक प्रश्न आ प्रौढ़ नाटकक सीमाना

अनेक नाटकमध्ये बालक प्रश्न पूछैत अछि, विद्यालय पहुँचबाक संघर्ष करैत अछि अथवा गीतद्वारा सार्वजनिक सहानुभूति जगबैत अछि। एकर आधारपर सभ नाटककेँ बालनाटक घोषित करब अनुचित अछि। बाल-कथानायक होएब, बाल-अभिनेता द्वारा मंचन सम्भव होएब, आ बाल-दर्शक लेल सम्पूर्ण नाटक उचित होएब—ई तीन अलग कसौटी अछि। ‘नवघर’क किछु दृश्य विद्यालयी प्रयोगक योग्य अछि, ‘बाप भेल पिप्ती’क शिक्षा-संघर्ष बाल-अनुभव केन्द्रित अछि, मुदा ‘बिसवासघात’ आ ‘भअँट’क हिंसा आ राजनीतिक दुरुहता मूलतः प्रौढ़ विषय अछि। समीक्ष्य अध्ययनक विधागत विवेकक एक उल्लेखनीय उपलब्धि ई सावधानी अछि।

सामाजिक सुधार आ नाटकीय स्वायत्तताक संघर्ष

कतेको रचनानामे निर्णायक क्षण पर अधिकारी, मुखिया, पंच वा सुसंस्कृत पात्र लम्बा नैतिक वक्तव्य दैत छथि। सार्वजनिक लोकमंचपर ई भाषण दर्शककेँ संगठित विचार देबाक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा जँ पात्रसभ एके निष्कर्ष दोहराबैत छथि, तखन संवादक आन्तरिक संघर्ष कमजोर पड़ैत अछि। रंगमंच केवल कथन-प्रसारक यन्त्र नहि; प्रतिवाद, मौन, देहगत क्रिया, विडम्बना आ अनिर्णीत आशंकाक कला सेहो अछि। सुधारवादी उद्देश्य जतेक बलशाली, शिल्पगत अनुशासनक आवश्यकता ओतेक अधिक।

लोकहास्यक नैतिक विवेक

‘रसुन पियोज’क उपनाम, ‘घोघवाली कनियाँ’क घरेलू व्यंग्य, ‘बेटीक अपमान’क विवाह-रीति, ‘बाप भेल पित्ती’क पण्डित-दक्षिणा, ‘ऊँच-नीच’क संगति, ‘बिसवासघात’क चाह-दोकान आ ‘भअँट’क चुनावी प्रचार सभ अपन हास्य-व्यवस्था रचैत अछि। हास्य कतेको बेर सत्ताक आवरण फाड़ैत अछि, मुदा कखनो कमजोर व्यक्तिक अपमान दोहराओ सकैत अछि। आलोचनाक काम केवल दर्शक हँसल कि नहि, ई पूछब नहि; के हँसल, ककरा पर हँसल आ हँसीक बाद सामाजिक दूरी घटल कि बढ़ल—ई सेहो पूछब अछि।

सुखान्तक भरोसा आ सामाजिक प्रक्रियाक कठिनाता

व्यसन छोड़बाक घोषणा, बौकुक स्वीकृति, परिवारक लिखित समझौता, मीनाक क्षमा, मंजूरक पुरस्कार, पंचायतक जाति-विरोधी निर्णय, भ्रष्टाचारीक आर्थिक क्षतिपूर्ति आ सुभद्राक चुनावी विजय—ई सभ समाधानक रंग-भिन्न उदाहरण अछि। ओकरा सामाजिक संघर्षक वास्तविक समाप्ति नहि, लेखकक आदर्शवादी प्रत्याशाक नाटकीय प्रतिमा बुझल जाए तँ अर्थ गहिर होइत अछि। कतहु निजी मन-परिवर्तनक भरोसा अछि, कतहु सशक्त अधिकारीक, कतहु जनमतक। एहि भिन्नताक तुलनासँ स्पष्ट होइत अछि जे न्यायक स्थायित्व व्यक्तिगत सद्भावसँ बेसी संस्थागत उत्तरदायित्व माँगैत अछि।

८. नाट्य-पद्धति आ समीक्षाशास्त्र : आलोचकक उपलब्धि एवं सीमा

दृश्यक अनुवर्तनक लाभ

‘नित नवल’ प्रत्येक बड़ नाटकक अङ्क-दृश्य क्रम अनुसरण करैत अछि। एहि उपायसँ पाठककेँ पात्रक प्रवेश, वस्तुक परिवर्तन, हास्यसँ करुणा धरि स्वरक गति, आ अंतिम निर्णयक तैयारी देखबाक बाट भेटैत अछि। विशेष रूपेँ ‘बिसवासघात’क चालीस दृश्य आ ‘भअँट’क चुनावी क्रम सम्हारबाक लेल ई पद्धति उपयोगी अछि। नाटकक आन्तरिक साक्ष्यक बारम्बार उल्लेख निष्कर्षकेँ निराधार प्रशंसा बनबा सँ रोकैत अछि।

कथासार आ आलोचनाक महीन दूरी

दृश्यवार लेखनक जोखिम ई अछि जे प्रत्येक उपशीर्षक नाटकक अगिला घटनाक सूचना देबाक यन्त्र बनि जाए। आलोचनात्मक अनुच्छेदक वास्तविक कसौटी ई होयबाक चाही जे ओ बताउ—एहि दृश्यसँ कथाक गति, पात्रक विकल्प, दर्शकक ज्ञान अथवा नैतिक तनाव कोना बदलल। समीक्ष्य अध्ययन बहुत ठाम एहि स्तर धरि पहुँचैत अछि: उदाहरणार्थ चाहक बदलैत अर्थ, कुर्सी-भुइँक दूरी, बालकक लोकगीत, घरक अनुबन्ध, मतगणनाक अंक। मुदा अत्यधिक दृश्यगणनासँ किछु खण्डमे वैचारिक पुनरुक्ति सेहो उत्पन्न होइत अछि। आगामी सम्पादकीय संक्षेपमे एकहि निष्कर्षकें प्रसङ्गानुसार अधिक संकेन्द्रित कएल जा सकैत अछि।

पाठ आ मंचनक पृथक्करण

अध्ययन कहैत अछि जे लिखित नाटकक भीतर सम्भावित मंचनक संकेत रहैत अछि, मुदा मञ्चनक वास्तविक प्रभाव बाह्य प्रमाणक प्रश्न अछि। ई विश्लेषण पद्धतिक आवश्यक आत्म-संयम अछि। गीत मंचनक कतेक देर चलत, लम्बा अनुबन्ध दर्शककें कोना लगत, हिंसा दृश्य रूपेँ कतेक उपयुक्त अछि—एहि सभ पर आलोचक सम्भावना बतबैत छथि; ओ प्रत्यक्ष प्रस्तुति देखबाक दावा नहि करैत। साहित्यिक इतिहासक संग रंग-इतिहास लिखब होए तँ नाटकक पुस्तक, प्रस्तुति-पत्रक, निर्देशकक नोट, कलाकारक साक्षात्कार आ दर्शक-अनुभव अलग-अलग स्रोत बनत।

तुलना : उपयोगिता आ अनुपयुक्त समतलीकरण

मैथिली बालसाहित्य, लोकपरम्परा, दलित विमर्श आ समानान्तर रंगमंचक सम्बद्ध लेखसभक उपयोग अध्ययनक परिप्रेक्ष्य विस्तृत करैत अछि। तथापि तुलना तखने उपयोगी अछि जखन नाट्यरचनाक अलग ऐतिहासिक समय आ विधागत उद्देश्य सुरक्षित रहय। २०१०क शिशु-लोकसाहित्यक लेख, २०१३क बालनाट्य-विमर्श आ २०२६क आलोचनात्मक अवधारणा एकहि समयक लेखक-मंशा नहि अछि। एकरा उत्तरकालीन मूल्याङ्कनक उपकरण मानल जाए। तहिना ब्रेख्तीय दूरीक सम्भावित साम्य बतबैत समय प्रत्यक्ष प्रभाव अथवा अनुकरणक दावा नहि करब विद्वत्पूर्ण संयम अछि।

प्रमाणक असमानता

पुस्तकक अन्तिम सन्दर्भ-सूची ग्रन्थ-वर्षक अनिश्चितता स्पष्ट करैत अछि। ई उल्लेखनीय गुण अछि। तथापि मूल नाट्यग्रन्थक पाठान्तर, छपाइक अलग संस्करण, मंचन-तिथि आ प्रतिक्रिया उपलब्ध भेला पर कतेको निर्णय पुनर्परीक्षण योग्य रहत। ‘नीशा मुक्ति’क नामरूप, ‘घोघवाली कनियाँ’क समझौताक बिन्दुसभ, ‘बिसवासघात’क आँकड़ा आ ‘भअँट’क मत-परिणाम जकाँ ठोस विवरण खोज-अध्ययनक लेल मार्ग खोलैत अछि; पूर्ण पाठ-समालोचना लेल मूल मुद्रणसँ मिलान अगिला चरण होयत।

९. पाँच चयनित नाटक : प्रतिनिधि शिल्प आ अर्थक आधारपर

एतय पाँच नाटकक चयन सर्वकालिक क्रमांक अथवा एकटा निर्णायक पुरस्कार-सूची नहि। चयनक कसौटी अछि—विषयक विशिष्टता, नाटकीय वस्तुक अर्थवत्ता, सामाजिक संघर्षक संरचना, पात्रक स्वायत्त प्रतिवाद आ अध्ययनक भीतर उपलब्ध पाठ-प्रमाण। छओ ग्रन्थमे समाहित अन्य नाटक अपन अलग महत्त्व राखैत अछि; एहि पाँचकें प्रतिनिधि आलोचनात्मक पाठक रूपमे अलग देखल जा रहल अछि।

१. ‘घोघवाली कनियाँ’ : घरेलू अनुबन्धक प्रयोग

रूपवतीक घर-भीतरक प्रतिवाद आ परिवारक बाइस बिन्दुक लिखित समझौता एकहि नाटकमे भावना आ संस्थागत नियमक द्वन्द्व रचैत अछि। एकर कलात्मक सामर्थ्य घरक असमान सम्बन्धकें दैनिक क्रियासँ सार्वजनिक पंचायत धरि पहुँचबामे अछि। सीमा लम्बा अनुबन्ध-पाठ आ सामाजिक सहमतिक शीघ्रतामे अछि। ओहि कारण नाटक रंगमंचक दृष्टिसँ संक्षेप आ वस्तु-आधारित मंचनक आग्रह करैत अछि।

२. ‘छीनरदेवी’ : तर्कक छद्म-रंग

परबतियाक लोकपरिचित दैवी भेष आ अन्धविश्वास-विरोधी तर्क नाटकीय प्रतिपक्षक सघन नमूना अछि। ई दर्शकक अपेक्षा आ वास्तविक उद्देश्य बीच अन्तर उत्पन्न करैत अछि।

सीमित दृश्यक कारण प्रस्तुति सम्भावना स्पष्ट अछि। मुदा डाइन-आरोप झेलनिहार सुकनीक स्वायत्त आवाज आ सामाजिक पुनर्वासक प्रश्न आर विस्तृत होयबाक चाही।

३. ‘ऊँच-नीच’ : वस्तुक माध्यमे सामाजिक श्रेणीक्रम

पथिया, हँसली, डीह, शुल्क आ कागजक अनुक्रम गरीब परिवारक शिक्षा-यात्राक मौन अर्थव्यवस्था प्रस्तुत करैत अछि। मरनीक सक्रियता आ दुखनक शिक्षा कृतिक भावात्मक बल अछि। यथार्थक सीमा जाति-समस्या पर अंतिम पंचायत-विवाहक अतित्वरित समाधानमे अछि। एहिठाम कृति सामाजिक समताक आशा आ सामाजिक सत्ता-संरचनाक कठिनता एकसंग देखबैत अछि।

४. ‘बिसवासघात’ : दस्तावेज, चाह आ अपूरणीय शोक

भाईचाराक भरोसा जमीनक दस्तावेजमे बदलैत अछि; चाहक अर्थ आत्मीयतासँ छल धरि जाइत अछि; मुआवजाक रकम नीतिगत न्यायक प्रश्न बनैत अछि। रामलालक मृत्यु कथाकेँ निजी सम्पत्ति-संघर्षसँ व्यापक लोकन्यायमे बदलैत अछि। अवैधानिक दण्डक समस्या नाटकक नैतिक सीमा अछि। लखनक अन्तिम अपूरणीय प्रश्न ओकर सभसँ सशक्त मानवीय अर्थ सुरक्षित रखैत अछि।

५. ‘भअँट’ : निर्वाचनक संस्थागत रंगमंच

पाँच प्रत्याशी, सार्वजनिक स्थल, मतदानक प्रक्रिया आ मतगणनाक अड्क जोड़िकऽ नाटक चुनावकेँ व्यवहारगत तन्त्र बनबैत अछि। सुभद्राक विजयानन्तर जनसेवाक प्रतिज्ञा राजनीतिक कथा केँ बन्द सुखान्तसँ बचबैत अछि। सीमा अत्यधिक पात्र-संख्या, कतिपय फूहड़ता आ परिणामक कारण-परिणामक संक्षिप्त चित्रणमे अछि। तबो सामाजिक लोकतन्त्रक रंग-कल्पनामे ई एक महत्वाकाङ्क्षी प्रयोग अछि।

१०. समग्र मूल्याङ्कन : लोकभाषा, जनन्याय आ रंगक खुलल

प्रश्न

बेचन ठाकुरक नाट्य-संसारक एहि समीक्ष्य अध्ययनसँ जे मुख्य आकृति उभरैत अछि, ओ सामाजिक सुधारक सिद्धान्तक अमूर्त मंच नहि, दैनिक जीवनक ठोस पदार्थसभसँ बनल रंगलोक अछि। घरक खाट, बच्चाक थारी-लोटा, गहबर, स्कूलक शुल्क, वृद्धक देखभालक अनुबन्ध, रिक्शाचालकक आवेदन, गरीब माएक हँसली, भूमि-कागज, चाहक गिलास, चुनावी पर्चा आ मतयन्त्र—ई सभ वस्तु सामाजिक सत्ता सम्बन्धक दृश्यात्मक व्याकरण रचैत अछि। शिल्पक सबसँ प्रभावी ठाम ओ अछि जतए वस्तु पात्रक अनुभूति बदलैत अछि; सबसँ कमजोर ठाम ओ अछि जतए पात्र अनुभवक बदला सुधारक घोषित नारा बजबैत अछि।

लोकमैथिलीक शक्ति एहि नाट्यजगतकें साहित्यिक प्रतिष्ठा दैत अछि। मूल शीर्षकक लोक-रूप, घरेलू सम्बोधन, तर्क-वितर्क, व्यंग्य, चुटकी, गीत आ सार्वजनिक नाराबाजी पात्रक सामाजिक धरातल बनबैत अछि। मानक भाषा नाटकक सभ स्वरकें एक करि देत तँ ओकर वर्गगत तनाव, स्थानिकता आ हास्यक लय घटत। मुदा लोकभाषाकें संरक्षित करबाक अर्थ अपमानक आलोचनात्मक दूरी मिटा देब नहि। जातिसूचक गारि, स्त्रीक तिरस्कार अथवा कमजोर लोकपर हँसीक प्रस्तुति मंचपर अपन नैतिक प्रसङ्ग स्पष्ट माँगैत अछि।

समीक्ष्य पुस्तकक एक पैघ बौद्धिक योगदान साहित्य आ मंचनक भेद, तथा समाजसुधार आ नाट्यनिर्माणक भेद स्पष्ट करब अछि। आलोचक कहानी कहि सन्तुष्ट नहि होइत छथि; ओ पात्रक कर्तृत्व, दृश्य-संयोजन, संवादक पुनरावृत्ति, सम्भावित मंचनक अवधि, बाल-अभिनयक सीमा आ सार्वजनिक संस्थाक न्यायशीलतापर प्रश्न उठबैत छथि। एहि पद्धतिसँ मैथिली नाटकक समीक्षा केवल ‘कथ्य नीक अछि’ बला निर्णयसँ आगाँ बढ़ैत अछि।

ओहिसंग अन्तिम सावधानी ई अछि जे सामाजिक संस्थाक अनेको समस्या पाठमे एकजुट होइतहुँ ओकर समाधान प्रायः एक सज्जन पंच, अधिकारी, पिता अथवा विजयी

प्रत्याशीक रूपमे आबैत अछि। आशा लोकनाटकक प्राण होइत अछि, मुदा आशाकें प्रक्रियाक विकल्प बना देलासँ न्याय अल्पजीवी बुझाइत अछि। अपराधक न्यायिक सुनवाइ, बच्चाक संरक्षण, स्त्रीक आर्थिक स्वतन्त्रता, जाति-विरोधक सामूहिक संगठन आ जनप्रतिनिधिक निरन्तर उत्तरदायित्व—ई सभ नाटकीय उपसंहारक बादक प्रश्न अछि। नीक आलोचना एहि प्रश्नसभकें बन्द नहि करैत।

‘नित नवल’क उपलब्धि एएह अछि जे ओ एहि प्रकारक प्रश्नक द्वार खोलैत अछि। ओकर सीमा अनेक प्रसङ्गमे एके न्याय-सुधार कसौटीक पुनरावृत्ति, कतेको दृश्यक कथासारक विस्तार, आ मूल मुद्रण एवं मंचन-अभिलेखक पूर्ण मिलानक अभावसँ जुड़ल अछि। ई सीमा स्वीकार करब एकर विवेचनक महत्व घटबैत नहि; बरु भविष्यक शोध लेल कामक सूची तैयार करैत अछि। अगिला चरणमे मूल संस्करणसभक पाठान्तर, ग्रामीण प्रस्तुति-पत्रक, निर्देशक-नोट, स्त्री-अभिनेताक अनुभव आ प्रेक्षक-विमर्श एकत्रित भेलापर एहि आलोचनाकें आर पैघ ऐतिहासिक आधार भेटि सकत।

एहि खण्डक निष्कर्ष केवल एतबे नहि जे बेचन ठाकुर सामाजिक प्रश्नपर नाटक लिखैत छथि। अधिक विशिष्ट निष्कर्ष ई अछि जे हुनकर रंगजगतमे हाशियाक मनुष्य अपन अनुभवकें गामक बीच सुनाबय चाहैत अछि—कखनो गीत द्वारा, कखनो प्रश्न द्वारा, कखनो कागज द्वारा, कखनो सभा द्वारा, कखनो मत द्वारा। साहित्यक उत्तरदायित्व एहि आवाजकें सजीव राखब अछि; आलोचनाक उत्तरदायित्व एहि आवाजक सफलता आ असफलता, दुनूकें समुचित प्रमाण सहित सुनब अछि। ‘गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय’क खण्ड-७१ एहि विवेकपूर्ण पुनर्पाठमे अपन औचित्य पबैत अछि।

स्रोत-सीमा आ सम्पादकीय टिप्पणी

एहि आलोचनात्मक खण्डक आधार ‘नित नवल : बेचन ठाकुर — छओ नाट्यग्रन्थक आलोचनात्मक अध्ययन’, लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विदेह, २०२६, उपयोगकर्ता द्वारा उपलब्ध कराओल DOCX प्रति अछि। समीक्ष्य पुस्तकक अनुक्रमणिकाक अनुसार छओ अध्ययन क्रमशः ‘नवधर’ (पृ. १-१५), ‘बेटीक अपमान आ छीनरदेवी’ (पृ. १६-३०), ‘बाप भेल पित्ती आ अधिकार’ (पृ. ३१-४४), ‘ऊँच-नीच’ (पृ. ४५-६१), ‘बिसवासघात’ (पृ. ६२-

७५) आ 'भअँट' (पृ. ७६-८८) सँ सम्बद्ध अछि; 'समीक्ष्य ग्रन्थ आ सन्दर्भ' पृ. ८९ सँ आरम्भ होइत अछि। एहि पृष्ठ-संकेतक सम्बन्ध मूल समीक्ष्य पुस्तकक मुद्रित अनुक्रमणिकासँ अछि, न कि एहि नव सम्पादकीय खण्डक पृष्ठाङ्कसँ।

मूल बेचन ठाकुर नाटकसभक स्वतन्त्र प्रतियाँ आ प्रत्यक्ष मंचन-अभिलेख एहि तैयारीमे अलगसँ जाँचल नहि गेल अछि। एहि कारण संवादक उद्धरण, दृश्य-संख्या, प्रकाशन-वर्षक अनिश्चितता आ पात्रक विवरण समीक्ष्य अध्ययनक माध्यमसँ ग्रहण कएल गेल अछि। साहित्येतिहासक बाह्य दावासभक स्वतन्त्र सत्यापन एहि खण्डक कार्यक्षेत्रमे नहि कएल गेल अछि। समीक्ष्य पुस्तकमे 'नवघर'क संस्करण-वर्ष २०१७/२०१८, 'बेटीक अपमान आ छीनरदेवी'क कालगत उल्लेख आ 'भअँट'क सुनिश्चित प्रकाशन-वर्षक अभाव विशेष सावधानीक विषय अछि।

समीक्ष्य पुस्तकक अन्तिम सूचीमे बेचन ठाकुरक छओ ग्रन्थक संग आशीष अनचिन्हारक 'बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी' (विदेह, अङ्क ८२, २०११), गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-समीक्षात्मक लेखसभ, मैथिली बालसाहित्यक सम्बद्ध विदेह-अभिलेख आ शोध-सूची उल्लिखित अछि। एहि खण्डमे ओ सभक नाम स्रोतक आलोचनात्मक सन्दर्भरूपेँ देल गेल अछि; स्वतन्त्र वेब अथवा अभिलेखीय पुष्टि कएलाक दाबी नहि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७१

एहि खण्डमे 'नित नवल : बेचन ठाकुर'क छओ
नाट्यग्रन्थपर आधारित अध्ययनक समालोचनात्मक
पुनर्पाठ अछि। लोकसमाज, स्त्री-अधिकार, जाति,
न्याय, लोकशासन आ सामाजिक विषमताक प्रसंग
पात्र, संवाद आ रंगशिल्पक संदर्भमे परखल गेल अछि।
रचनाक उपलब्धि आ सीमाक विवेकपूर्ण मूल्याङ्कन
एहि सम्पादकीय आलोचनाक मुख्य उद्देश्य अछि।

मूल पाठ । विस्तृत आलोचना । सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह